Series : SSO/1

Code No. कोड नं. 29/1/1

Roll No. रोल नं.

विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर कोड नं. अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्नपत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्नपत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्नपत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (ऐच्छिक)
HINDI (Elective)

Time allowed : 3 hours] *[Maximum marks : 100*

निर्धारित समय : 3 घंटे] *[अधिकतम अंक : 100*

खंड – 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भारतीय धर्मनीति के प्रणेता नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे । उनकी यह धारणा थी कि नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकतीं । उन्होंने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के निर्माण के लिए वेद की एक ऋचा के आधार पर कहा कि उत्कृष्ट जीवन-प्रणाली मनुष्य की विवेक-बुद्धि से तभी निर्मित होनी संभव है, जब 'सब लोगों के संकल्प, निश्चय, अभिप्राय समान हों; सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जागरित हो और सब लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल सभी कार्य करें । चरित्र-निर्माण की जो दिशा नीतिकारों ने निर्धारित की, वह आज भी अपने मूल रूप में मानव के लिए कल्याणकारी है । प्राय: यह देखा जाता है कि चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण होती है । जो व्यक्ति इन तीनों पर नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है, उसका चरित्र ऊँचा होता है । सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही सम्भव है । जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है, वह समाज सभ्य होता है और वही उन्नत कहा जाता है ।

चरित्र मानव-समुदाय की अमूल्य निधि है । इसके अभाव में व्यक्ति पशुवत् व्यवहार करने लगता है । आहार, निद्रा, भय आदि की वृत्ति सभी जीवों में विद्यमान रहती है, यह आचार अर्थात् चरित्र की ही विशेषता है जो मनुष्य को पशु से अलग कर, उससे ऊँचा उठा मनुष्यत्व प्रदान करती है । सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए भी चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है । सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में तभी जाग्रत होती है जब वह मानव-प्राणियों में ही नहीं, वरन् सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा का दर्शन करता है ।

(क) हमारे धर्मनीतिकार नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष जागरूक क्यों थे ? **2**

(ख) चरित्र मानव जीवन की अमूल्य निधि कैसे है ? स्पष्ट कीजिए । **2**

(ग) सामाजिक अनुशासन से क्या तात्पर्य है ? यह भावना व्यक्ति में कब जाग्रत होती है ? **2**

(घ) प्रस्तुत गद्यांश में किन पर नियंत्रण रखने की बात कही गई है और क्यों ? **2**

(ङ) विवेक बुद्धि का क्या आशय है ? यह कब निर्मित हो सकती है ? **2**

(च) 'उत्कृष्ट' और 'प्रगति' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए । **1**

(छ) 'आर्थिक' और 'मनुष्यत्व' शब्दों के प्रत्यय बताइए । **1**

(ज) 'चरित्र' और 'निर्माण' शब्दों के विशेषण बनाइए । **1**

(झ) 'संकल्प' तथा 'अभिप्राय' शब्दों के उपसर्ग बताइए । **1**

(ञ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । **1**

2. प्रस्तुत काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **1 × 5 = 5**

जीवन का अभियान दान-बल से अजस्र चलता है,
उतनी बढ़ती ज्योति, स्नेह जितना अनल्प जलता है ।
और ह्रान में रो कर या हँस कर हम जो देते हैं,
अहंकारवश उसे स्वत्व का त्याग मान लेते हैं ।

यह न स्वत्व का त्याग, दान तो जीवन का झरना है,
रखना उसको रोक, मृत्यु से पहले ही मरना है ।
किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं ?
गिरने से उसको सँभाल, क्यों रोक नहीं लेते हैं ?

ऋतु के बाद फलों का रुकना डालों का सड़ना है,
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है ।
देते तरु इसलिए कि रेशों में मत कीट समाएँ,
रहें डालियाँ स्वस्थ कि उनमें नये-नये फल आएँ ।

जो नर आत्मदान से अपना जीवन घट भरते हैं,
वही मृत्यु के मुख में भी पड़कर न कभी मरते हैं ।
जहाँ कहीं है ज्योति जगत में, जहाँ कहीं उजियाला,
वहाँ खड़ा है कोई अन्तिम मोल चुकाने वाला ।

(क) भाव स्पष्ट कीजिए – उतनी बढ़ती ज्योति, स्नेह जितना अनल्प जलता है ।

(ख) दान को 'जीवन का झरना' क्यों कहा गया है ?

(ग) देय वस्तुओं के प्रति मोह रखना आत्मघात कैसे है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

(घ) वे कौन से मनुष्य हैं जो मर कर भी नहीं मरते ? उनके चरित्र की विशेषताएँ बताइए ।

(ङ) कवि ने क्यों कहा है – किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं ?

अथवा

जहाँ भूमि पर पड़ा कि
सोना धँसता, चाँदी धँसती,
धँसती ही जाती पृथ्वी में
बड़ों-बड़ों की हस्ती ।

शक्तिहीन जो हुआ कि
बैठा भू पर आसन मारे,
खा जाते हैं उसको
मिट्टी के ढेले हत्यारे !

मातृभूमि है उसकी, जिसको
उठ जीना होता है,
दहन-भूमि है उसकी, जो
क्षण-क्षण गिरता जाता है ।

भूमि खींचती है मुझको
भी, नीचे धीरे-धीरे
किंतु लहराता हूँ मैं नभ पर
शीतल – मंद – समीरे ।

काला बादल आता है
गुरु गर्जन स्वर भरता है,
विद्रोही-मस्तक पर वह
अभिषेक किया करता है ।

विद्रोही हैं हमीं, हमारे
फूलों में फल आते,
और हमारी कुरबानी पर,
जड़ भी जीवन पाते ।

(क) 'विद्रोही हैं हमीं' – पेड़ अपने आप को विद्रोही क्यों मानते हैं ?

(ख) "धँसती ही जाती पृथ्वी में बड़ों-बड़ों की हस्ती" – काव्य पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(ग) इस काव्यांश में कवि ने किसे 'मातृभूमि' के लिए उपयुक्त और किसे 'दहन-भूमि' के योग्य बताया है ?

(घ) काला बादल किस का अभिषेक किया करता है ? और क्यों ?

(ङ) काव्यांश का मुख्य भाव क्या है ?

खंड – 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : **10**

(क) भारत में बाल मज़दूरी – समस्या व समाधान

(ख) राजनीति और भ्रष्टाचार

(ग) आतंकवाद : देश की प्रगति के लिए घातक

4. राजीव गाँधी फाउंडेशन उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति प्रदान करती है । आप अपनी योग्यताओं आदि का परिचय देते हुए संस्था के सचिव को आवेदन पत्र लिखिए । **5**

अथवा

आपके क्षेत्र की कानून व्यवस्था इतनी बिगड़ गई है कि हर व्यक्ति अपने को असुरक्षित महसूस करता है। इसके कारणों की चर्चा करते हुए समाधान हेतु पुलिस आयुक्त को पत्र लिखिए ।

5. रेडियो के लिए समाचार लेखन की बुनियादी बातों पर प्रकाश डालिए । **5**

अथवा

रेडियो और टेलीविजन के समाचारों की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक-दो** वाक्यों में दीजिए : **1 × 5 = 5**

(क) फ़ीचर किसे कहते हैं ?

(ख) उलटा पिरामिड शैली से क्या तात्पर्य है ?

(ग) खोजी रिपोर्ट का प्रयोग कब किया जाता है ?

(घ) स्तंभ लेखन से क्या अभिप्राय है ?

(ङ) किन्हीं दो हिंदी समाचार चैनलों के नाम लिखिए ।

खंड – 'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **8**

तब तौ छबि पीवत जीवत हे, अब सोचन लोचन जात जरे ।
हित-तोष के तोष सुप्राण पले, विललात महा दुख दोष भरे ।
घन आनँद मीत सुजान बिना, सबही सुख-साज-समाज टरे ।
तब हार पहार से लागत हे, अब आनि कै बीच पहार परे ।।

अथवा

आह ! वेदना मिली विदाई ।
मैंने भ्रमवश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई ।

छलछल थे संध्या के श्रमकण,
आँसू-से गिरते थे प्रतिक्षण ।
मेरी यात्रा पर लेती थी –
नीरवता अनंत अँगड़ाई ।

अमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन-विपिन की तरु-छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने –
यह विहाग की तान उठाई ।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) 'बारहमासा' के आधार पर विरहिणी नागमती की अगहन मास में व्यथा-कथा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ।

(ख) 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है ? उसे वसंत आगमन की सूचना कैसे मिली ?

(ग) 'सरोज स्मृति' कविता के आधार पर सरोज के नव वधू रूप का वर्णन करते हुए बताइए कि उसका विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था ।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** काव्यांशों में निहित काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये ऊसर बंजर तोड़ो
ये चरती परती तोड़ो
सब खेत बनाकर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को ?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो ।

(ख) कहि कहि आवन छबीले मनभावन को,
गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को ।।
झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास ह्वै कै,
अब न घिरत घन आनँद निदान को ।
अधर लगे हैं आनि करि के पयान प्रान,
चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को ।।

(ग) एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से,
रंग गई क्षण भर
ढलते सूरज की आग से ।
मुझ को दीख गया
सूने विराट् के सम्मुख
हर आलोक – छुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से !

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **6**

साहित्य का पांचजन्य समर भूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता । वह मनुष्य को भाग्य के आसरे बैठने और पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने की प्रेरणा नहीं देता । इस तरह की प्रेरणा देने वालों के वह पंख कतर देता है । वह कायरों और पराभव–प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समरभूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है ।

अथवा

दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था । उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम् त्याग दिया है, उसके अंदर स्व से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप में चेतन स्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है ।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए : **4 + 4 = 8**

(क) 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' पाठ में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है ?

(ख) "चंद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्त्तव्य पालन करना ही पड़ता है ।" – 'कच्चा चिट्ठा' आत्मकथा में लेखक ने यह वाक्य किस संदर्भ में कहा और क्यों ?

(ग) संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं ? वह बड़ी बहुरिया का संवाद क्यों नहीं सुना सका ?

12. कवि तुलसीदास **अथवा** केदारनाथ सिंह के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । **6**

अथवा

भीष्म साहनी **अथवा** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर लिखिए : **3 + 3 + 3 = 9**

(क) 'आरोहण' कहानी में घर लौटते समय रूपसिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी ?

(ख) 'बिस्कोहर की माटी' में ऐसी कौन सी स्मृति है जिसके साथ लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है ?

(ग) "अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा पहले गिरा करता था ।" उसके क्या कारण हैं ? 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

(घ) 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता' ? इस कथन के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए ।

14. 'सूरदास की झोंपड़ी' कहानी के आधार पर सूरदास के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । **6**

अथवा

'विकास की औद्योगिक सभ्यता हमारे पर्यावरण का विनाश कर रही है ।' – इस कथन को स्पष्ट करते हुए इस विनाश से बचने के उपाय 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर बताइए ।